ISSN : 2583-2948

असिस्टेंट प्रोफेसर
ज्योत्सना आर्य सोनी
आदर्श कॉलेज चामराजपेट बेंगलुरू

भारतीय भाषा के माध्यम से व्यवसायिक कौशल शिक्षा की संभावनाएं और चुनौतियां

कौशल तथा ज्ञान किसी भी देश के आर्थिक विकास तथा सामाजिक विकास की प्रेरक शक्तियां हैं। कौशल की उच्चतर एवं बेहतर स्तर वाले देश कार्य जगत की चुनौतियों तथा अवसरों से अधिक प्रभावी रूप से समायोजन कर लेते हैं। मौजूदा समय में भारत में बेरोजगारी बड़ी समस्या बनकर उभर रही है इस समस्या के लिए एक बड़ी वजह यह है कि शिक्षा हमें रोजगार से दूर होती हुई नजर आ रही है।

भाषा नियमों द्वारा नियंत्रित संप्रेषण का माध्यम भर नहीं है ,बल्कि एक परिघटना है। जो एक बड़े स्तर पर हमारी सोच क्षमता के संदर्भ में हमारी सामाजिक संबंधों को निर्मित करती हैं ।भाषा के व्यवसायिक कौशल को उच्चतर स्तर को प्राप्त न करने के बहुत से कारण है, जैसे भाषा की संरचना एवं प्रकृति के साथ-साथ सीखने सिखाने की प्रक्रिया की समझ का अभाव, खासकर बहुभाषिक संदर्भ में; शिक्षा योजना कारों द्वारा पूरी पाठ्य चर्चा में ज्ञान निर्माण की भाषा की भूमिका का नजरअंदाज करना, जाति नस्ल और जेंडर के साथ-साथ कई तरह के पूर्वाग्रह भाषा में अंतर्निहित होते हैं। इस बात की प्रति उदासीनता इस पूर्वाग्रह से मुक्त नहीं हो पाना की भाषा महजकविताओं और कहानियों और लेखो से नहीं बल्कि इससे कहीं ज्यादा को समाहित किए होती है यह निरंतर स्पष्ट हो रहा है कि जैव विविधता के रूप में हमारी जीवंतता के लिए भाषिक विविधता महत्वपूर्ण है। यूनेस्को के अनुसार 'समाज किस प्रकार शिक्षा के उद्देश्य को परिभाषित करते हैं इसके प्रकाश में ही गुणवत्ता को देखा जाना चाहिए'। शिक्षा का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि सभी बच्चे जिम्मेदार नागरिक ताकि निर्माण हेतु संज्ञान के लिए आवश्यक ज्ञान कौशल व मूल्य हासिल करें तथा यह भी देखना कि उसका उचित संज्ञानात्मक विकास हो।' साथ ही उसमें रचनात्मक व भावनात्मक बुद्धि को परिभाषित करना किसी भी समुदाय के प्रति किसी भी प्रकार के विवेक का विरोध करना दूसरे शब्दों में समता मूलक समाज के निर्माण की दिशा में योगदान देना है'।(यूनेस्को 2004) आज के उन्मादी माहौल में जिम्मेदार नागरिक की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। शिक्षा का अंग्रेजी पर्यायवाची शब्द एजुकेशन है हमारा शिक्षा शब्द संस्कृत की शिक्षा धातु से निकला है इसका अर्थ सीखना और सिखाना शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो मनुष्य की जन्मजात शक्तियों के स्वभाविक और सामंजस्य पूर्ण विकास में योग देती है । एक अमेरिकी व्यवसायिक संगठन के अनुसार-'व्यवसायिक शिक्षा ऐसी शिक्षा है जिसकी आवश्यकता कौशल विकास, योग्यता, समझ ,व्यवहार, काम करने की आदत के लिए है और जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने व्यवसाय में विकास करता है और जो उत्पादकता के आधार के लिए लाभकारी है'। सबसे पहले यह जान आ जाए कि व्यवसायिक भाषा क्या है? और इसका क्या महत्व है? व्यवसायिक वर्गों के आधार पर भाषा को अनेक श्रेणियों में बांटा जा सकता है।कुछ व्यवस्थाओं में बहुत प्रचलित शब्दावली के स्थान पर विशिष्ट अर्थ सूचक नई शब्दावली गढ़ ली जाती है इसके स्थिति बहुत कुछ सांकेतिक भाषा जैसी होती है। व्यवसायिक कौशल शिक्षा को समझे तो व्यवसायिक शब्द दो अर्थों में प्रयुक्त होता है ,एक जो हमारे काम करने के तरीके से जुड़ा है एक चीज जो नौकरी या पेशे से संबंधित है। दूसरे का मतलब अच्छी तरह से प्रशिक्षित का पर्याय समझा जा सकता है ।दूसरे

अर्थों में व्यवसायिक शिक्षा का उद्देश्य छात्रों को व्यवसाय परक बनाना है। जिससे वह समाज में सम्मान पूर्वक रहने योग्य बन सके। जीविकोपार्जन करने की दक्षता का विकास करना जिससे वह अपने पारिवारिक उत्तरदायित्व को भलीभांति निर्वहन कर सकें। राष्ट्रीय आर्थिक संरचना को मजबूती प्रदान और प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि करने से राष्ट्र विकास के पथ पर अग्रसर होता है। साथ ही शिक्षा के विस्तार को बढ़ावा मिलता है। किसी देश के विकास में उस देश के शैक्षणिक व्यवस्था का मजबूत होना बहुत अधिक महत्व रखता है। यदि कोई भी शिक्षा व्यवस्था उस देश के नागरिकों को व्यवसाय दिलाने के साथ उनको जीविकोपार्जन योग्य बनाती है तो उस देश का विकास निश्चित है। वास्तव में देखा जाए तो शिक्षा अपने वास्तविक उद्देश्य और लक्ष्य को तभी प्राप्त कर सकती है जब शिक्षा व्यवसायिक हो। और वर्तमान में शिक्षा की घटती गुणवत्ता को ध्यान में रखते हुए जरूरी है कि शिक्षा को पूर्णता व्यवसायिक शिक्षा में परिवर्तित किया जाए क्योंकि यह छात्रों के सर्वांगीण विकास में भी सहायक है।

भारतीय भाषाओं के बढ़ते चलन और वैश्विक रूप में रोजगार की अनेक संभावनाओं को जाकर किया है। कुछ विशेषज्ञ मानते हैं कि अगर शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो ऐसे व्यक्तियों के संज्ञानात्मक कुशलता को बेहतर तरीके से विकसित किया जा सकता है। प्राथमिक और माध्यमिक स्कूल शिक्षा के अलावा भारतीय भाषाओं में व्यवसायिक पाठ्यक्रम जब उन्हें चिकित्सा, इंजीनियरिंग और वैज्ञानिक पाठ्यक्रमों के माध्यम के रूप में पर्याप्त विकसित नहीं किया गया तो यह व्यवस्थित होगा। हालांकि इसे हासिल करना असंभव नहीं ,लेकिन चुनौतियों से भरा है ।इसके लिए गुणवत्तापूर्ण संकाय सदस्यों का चयन, तकनीकी विषयों में देशी शब्दावली को विकसित करना ।जब विभिन्न राज्यों के डॉक्टर इंजीनियर एक ही प्रक्रिया के लिए अलग-अलग शब्दों का प्रयोग करते हैं तो यह दुविधा पूर्ण हो जाता। हमारी दुनिया आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की तरफ बढ़ रही है ।नौकरी रहित भविष्य के खतरे को कौशल विकास के माध्यम से बेहतर बनाया जा सकता है। भारत आज वैश्वीकरण के जिस दौर की ओर बढ़ रहा है वहां पूरा विश्व एक बाजार के रूप में खुल गया है। विदेशी कंपनियां हमारी भारतीय बाजारों की ओर आकर्षित हो रही है। ऐसे समय में भारतीय भाषाओं की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ जाती है। शिक्षा का व्यवसायिक उद्देश्य छात्रों को व्यवहारिक कौशल और ज्ञान प्रदान करने पर केंद्रित है, जिसे सीधे उनके पेशेवर कैरियर में लागू किया जा सकता है। जिससे छात्रों को अपने करियर में एक मजबूत को विकसित करने और कुशल बनाने में मदद मिलेगी। व्यवसायिक कौशल शिक्षा में संभावनाएं बढ़ाने से भारतीय अर्थव्यवस्था की उत्पादन क्षमता को भी बढ़ाया जा सकता है। देश के नागरिक की आर्थिक सुधार की ओर अग्रसर होंगे। स्वरोजगार की तरफ बढ़ कर वे बेरोजगारी जैसी समस्या से बच सकते हैं। साथ ही युवाओं को विशेषज्ञ, तकनीशियन के रूप में प्रशिक्षित किया जा सकता है ।जिससे आर्थिक प्रगति के लाभ का समान वितरण किया जा सकता है। इसके साथ ही महिलाएं ग्रामीण और आदिवासी छात्रों और समाज के हाशिए के सदस्यों की आवश्यकताओं को भी समायोजित करने के अवसर पर प्रदान किए जा सकते हैं,साथ ही छात्रों को पढ़ाई के साथ काम के प्रति जुनून भी पैदा किया जा सकता है। यूनिसेफ 2019 के एक अध्ययन के अनुसार कम से कम 47% भारतीय युवा 2030 तक नौकरी के लिए आवश्यक गति से नहीं है व्यवसायिक कार्यक्रम में भाग लेने वाले छात्रों को अक्सर विश्वविद्यालय के स्नातकों की दर की तुलना में नौकरी पाने में कम समय लगता है। इसलिए व्यवसायिक कौशल शिक्षा के महत्व कम अपना हमारी भारी भूल होगी। सरकार भी कई तरह की योजनाओं के क्रियान्वयन कर रही है जैसे भारत सरकार द्वारा प्राय लुप्त भाषाओं के संरक्षण को बढ़ावा देने हेतु 'लुप्तप्राय भाषाओं की सुरक्षा और संरक्षण' के लिए योजना एसपीपीएल (sppel) का क्रियान्वयन किया जा रहा है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग यूजीसी देश में उच्च शिक्षा पाठ्यक्रमों में क्षेत्रीय भाषाओं को बढ़ाने देने का प्रयास कर रही हैं। केंद्रीय विश्वविद्यालयों में लुप्त प्राय भाषाओं हेतु केंद्र की स्थापना से संबंधित योजना के तहत कुल 9 केंद्रीय विश्वविद्यालयों को वित्तीय सहायता प्रदान की जा रही है। हाल ही में केरल राज्य सरकार द्वारा शुरू किए गए 'नमथ बसई कार्यक्रम' ने राज्य की जनजातीय बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने हेतु मातृभाषा को अपनाने में सहायता प्रदान करने की महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

ऐसे समय में भारतीय भाषाओं में व्यवसाय कौशल शिक्षा की संभावनाएं और अधिक बढ़ जाती है।